

# श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अक्षर' श्री हम बड़ सावधान

अना दिनक दोखे जखन जे भऽ जाइत तकर मोजर नहि हो, ते एहेन कदाचित् कहियो किछु भऽ गेल हो से दोसर बात, अना हम बड़ सावधान लोक छी । ई आन्तरिक दिश्या दुनू प्रण के छलनि आ समय-समयपर दुनू बेकती एकर उद्घोषणा सेहो करैत रहैत छथि ।

भादवक पूर्णमासी । एगारह बजैत राति । वातावरणमे एक संगीतक स्वर ! दूरपर झिगरक झंकार ओहि संगीतक स्वरके अपूरित करैत । मोतीचूर लड्डूक दाना सन-सन बुझी आकाशसे नचैत, केराक पातपर झिहिर-झिहिर स्वरमे गबैत, धरतीपर आवि-आवि लहलोट भऽ रहल छल । भारतीय राजनीतिमे विपक्षी दल जकाँ निष्प्रभ भेल चन्द्रमा कोन झोझमे झपायल छलाह, तकर ककरो पता नहि । गुजगुज अन्हार आ सड़कपर कुम्भीपाक नरकक दृश्य, थाल-खिच, नाला-नाली सड़क एकार्णवा भेल ।

रिक्शाक खड़खड़वाक स्वर प्राकृतिक संगीतक स्वरमे डूबल ध्यानके सहस्र अपना दिस खींचि लेलक । खिड़कीक बाहर आँखि गेल तँ दूरपर टाँचक इजोत सेहो बिजलीता जकाँ एक बेर चमकि उठल । रिक्शापरसे किछु मोटा चोटा उतारि कऽ राखल जाइत रहैक तकर अनुभव कानेके भेलैक, आँखिके नहि । किछु क्षणक बाद, नाम कथी ले कहू, बूझि लियऽ जे फल्लाँ बाबूक ककश स्वर कानमे पहुँचल—गदही छी ! गदही !! आव राति भरि बैसि जलझम्प लैत रहू ।

प्रत्युत्तरमे एक नारी-स्वर मुखरित भेल—हम गदही छी से हमरा बापके नीक जकाँ बूझल छलनि, ते एहन जोड़ी जोहि कऽ मिलौलनि । अपने गलती कऽ लेब आदोख अनकामाथपर थोपि देवैक ! एहन लोक बड़ मारुख होइत अछि ।

राति भीजि रहल छलैक, अन्धकार गढ़ायल जा रहल छलैक । वातावरणमे पूर्ण शीतलता आवि गेल छलैक । किछ ठाँइ-ठाँइ स्वर सेहो कान धरि पहुँचल, परन्तु आँखि अलसायल छल, कखन निन्न भऽ गेल से नहि बुझलएक । परन्तु ओ निन्न रहल नहि । केव डके बाहरसे क्यौ ठक कौतुक । स्वीच देलएक तँ लाइन गेल । ताँवा खिड़की लगसँ एक टा छाया बाजि उठल—कनेक अपन कुजो क झब्बा

देल जाय । स्वरसे चिन्हलियनि जे फल्लाँ बाबूथिकाह । हम सिरमामे राखल सलाइ आ मोमवत्ती लऽ इजोत कयलहुँ, वेव ड फालि देलियनि आ फल्लाँ बाबू भँतर अयलाह । हम तँ फक्कड़ लोक, कुर्ज क झब्बा, हमरा कतसे आओत ? एक टा कुजी अछि, डड़-डोरिमे बन्हने रहैत छी । हमरासे कुजीक रक्षा होइत छैक आ कुजी आ हमरा शनिसँ रक्षा होइत अछि । हमरा पूव आभास भेटि चुबल छले जे एखन ई पूण मानसिक उत्तेजनामे छथि । ते कनेक बैसि जयवाक आग्रह कयलियनि तँ झझकारिते बाजि उठलाह—सामान सभ बरण्डेपर पड़ल अछि आ अपनैक शिष्या एकसरिए ओहि ठाम बैसल छथि । दुनू गोटे आध-छँधा भिजले छी ।



(३)

कथकार

शिष्यासे फल्लाँ बाबूक तात्पर्य छलनि अपन पत्नीसँ । ओ विवाहसँ पहिने गमक कन्या मध्य विद्यालयसँ मिडिल पास कयने छलथिन । नागरिक जीवनमे अयलाध बाद प्रौढ-वस्थामे पुनः पढ़वाक इच्छा भेलनि । ताहि क्रममे कखनो कखनो किछु-किछु मार्गदर्शन कऽ देवाक निवेदन कयने छलाह । पत्नीकेँ पढ़वाक इच्छा देखि फल्लाँ बाबू पूर्ण उत्साहित भेल छलाह । ओही क्रममे हमर डेरासँ अवरजानत आरम्भ भेल छलनि आ हमरा हुनकामे गुरु शिष्यक सम्बन्ध स्थापित भऽ गेल छल । गुरु तँ भरि दिन अपन धन्यामे व्यस्त रहनिहार जीव, हिनका गप्प लड्यवाक पलखति कऽ, परन्तु गुरुआइनिक प्रति ततेक भक्ति-भाव

बढ़ि गेल छलनि आ मध्याह्नमे समय बट-बाक हेतु अधिक बाल हमर डेरा आइलि करथितथा अपर हूमे टोल परोसमे टहलवा-बुलबाक हेतु दुनू गोटे संगहि जाइत छलैह ।

हम फल्लाँ बाबूकेँ अपसर्पित होयवाक कारण पुछलियनि । त ओ सम्पूर्ण आमा माइक खिस्सा सुनवऽ लगलाह । कोम्हरोस वसातक झोंक उठलैक जाहिसँ आवाइकेँ किछ किछ सावकाश होवऽ लगलैक । कने-मने मेघ छटऽ लगलैक तँ कतहु कतहु दू चारिटा तारा रेहो टिमटिमाइत अपन अस्तित्वक सूचना देवऽ लागल । एमहर फल्लाँ बाबू हमर शिष्याक अटहडपन, असाध्य नता, दीर्घसूत्रिता आदिक वणन वरैत सुधिए दिसि गेलाह । ओमहर हमर शिष्या आँध-य लगलैह । हिनक विलग होइत देखि ओही टुघरल-टुघरल हमर डेरामे चल अइलैह । आव हमर कोठल मे रम्भा-शुक् सवाद आरम्भ भऽ गेल । हम मने मन अपन दुर्भाग्यपर झँत रही जे एहन विलक्षण नि । क योग्य रात उन्हल जा रहल अछि आ दुनू प्रणी हमर प्रणकेँ अदृश्यमे राखि देने छथि ।

उक्त दम्पती अपनहि उतरा चौरी कऽ रहल छलाह । ताहिमे विलक्षणता ई जे दुनू बेकती हमरें सम्बोधित कऽ एक-दोसरपर अभियोगपर अभियोग लगौने जा रहल छलाह आ हम आँघाइट महादेवक बसहा जकाँ मान कखनो कऽ मूढ़ी डोला रहल छलहुँ । दुनू गोटाक उतराची निगल कित रूपेँ चल रहल छलनि—

पति—मास्टर साहेब ! हिनका पुछियौनि जे अदौड़ी, दनौरी, पापड़, अचार, आमिल, सरिसाँ आदि संसार भरि रसतु तँ ई बोरामे कसलनि, परन्तु डेराक बुजी लेलहुँ की नहि, तकर सुधि नहि रखलनि । ई सावधान लोकक काज थिकेक ?

पत्नी—मास्टर साहेब ! हिनका पुछियौनि जे आइ धरि डेराक बुजी ई छूबहु देलनि अछि ? हम जहाँ रहल कनो वस्तु छूबनि तँ हताह—छोड़, झड़, झड़ि छी, कतहु भुतिया देव आ आइ डेराक बुजी गामपर अपने छोड़ि अयलाह अछि तँ ओ हमरेपर बाघ जवाँ गुहड़ि रहल छथि ।

पति—मास्टर साहेब ! परदाँ साल जेद लागि गेलनि जे ओही दिन हँसल लगैत अछि । सोनक बजार भाव प्रति छिएक । तथ.पि, ६००) रुमे एबटा ओही वनवा देलियनि । दुइओ मास नभेल छलनि, हम सभ गेटे गेलहुँ वृशेद-स्थित । पूजा करवाव दाल कोना दऽ आइसँ घीचि लेलनि । ओही ठाम जे हवन पसारलनि से बूझि रहल जे मर दप मरि गेल हँसनि ।

पत्नी—मास्टर साहेब ! हम की जानऽ गेलिएक जे बाबाव पूजा करैत दाल (शेष पृष्ठ ३३ पर)



(पष्ठ २५ क शेषांश)

दो कानदार गल्लामे रुपैया राखि लेने छल । हमरा ठाढ़ भेल देखि एक बेर मरदान छोड़लक ।

—'की देख' छी ?'

—'बंद' ।

—'देखि लेलहुँ ?'

—'हँ । . . बंदक नाटक ।'

हँ, क्षुब्ध होइत बाजल रही । दोकानदार चिन्तक मुद्रामे आवि गेल छल । हमरा उपदेश दैत बाजल रहय ।

—'ई नाटक एही लेल होइत छैक । हम जँ दोकान बंद करि रहलहुँ, तँ हिनका सभक कंठस गगनभेदी नारा निकलैत कोना । सभ अपन-अपन अड्डापर जा कंठ भिजौने होयताह ।'

हमरा विश्वास करऽ पड़ल छल । जुलूस चल गेल रहैक । हमरा ओहि दोकान पर ठाढ़ भेल रहब आब अखरैत छल । हम विदा भऽ गेल छलहुँ । मुदा ओ दोकानदार हमरा जाइत देखि कहने छल ।

—'भाइजी, ई बंद मात्र लोक मुँह बंद करबाक लेल छैक—जुलूसक भीतर-बाहर तँ खुजले छैक । बंद की होयतैक !

(पष्ठ ६ क शेषांश)

सेहो एहन चोर उचकड़ा सब रहैत छैक । ओहि टिकुरौनाक दायामे बाबा रोग दुःख देखि, मदाहिन जा पुछियौनि जे पहिले बेर जे 'इण्टरव्यू'मे जयबाक छलनि तँ ती । सटा नामे सुट बनबौलनि, सदासयमे ए फटा ग्रीक केश लेलनि । मैट्रिक्स एम्. एम्. सी. थरि सबटा सर्टिफिकेट रहनि । गाड़ीमे जाऽ सुति रहलाह । दिन माथ-तरसँ ग्रीक केश खींचि लेलनि से अपने तखन बुझनथिन जखन प्रात भेने निन्न टुटनि । नगद दू सय टा. टा सेहो ओहीमे रखे रहथि । 'इण्टरव्यू' की देताह, चुनरी सन मँह रुपये घूरि अयलाह । तीन मास धरि बाप देखिऽ सपनौर जवाँ छपकल फिरथि ।

पति—मास्टर साहेब ! भरि राति सावधान भेल गाड़ीमे जगले रहलहुँ । निबो तँ मनबधूँ विवश कैए दैत छैक । चारिबजेमे जाऽ लोक झपकी लागि गेल । लगमे एउ व्यक्ति परम शुभ्र-शास्त्र बसल छल । एउतो चेहरा-मोहरा एहन लुक्कड़ भऽ सकैत अछि से कयो अनुमानो नहि कऽ सकैत छल, मुदा हिनका पुछियौनि जे पछिना मासमे गैस सिलिण्डर की कयने छलीह ?

हम को उत्सुक भेलहुँ बात बुझबाक हेतु तँ फरजा बाबू अपन पत्नीक सावधानताक वर्णन करैत बजलाह—चारि बषसँ हम गैस चुनहा रखने छी । आब एउर सिलिण्डर दाम पचास टा. टा भऽ गेलैक अछि जाबत मास नहि लागत ताबत आर्डर नहि लेत । दू दिन सिलिण्डर अयना भेल छलैक । बहिनक विवाह ठीक भेलनि तँ हड़बड़ावले भाय अयलथिन लऽ जयबाक हेतु । चारि दिन वास्ते हम सब रतुका गाड़ीसँ बिदा भेलहुँ । भानस-भात करैत वस्तु जात सम्भारैत माइके समय लगिचा

गेलैक । हड़बड़ीमे घर-दुआर बन्द कऽ चलि देलनि । सातदिनक बाद घुरैत गेलहुँ । बससँ उतरि डेरापर अचिते देरी कहियनि पहिने चाहि पिआ देबाक हेतु । पाँच-सात टा दाठी खड़लनि, मुदा चुलहा नहि पजरलनि । जाऽ देखैत छी तँ सिलिण्डरकेँ फुजले छोड़िऽ चल गेल छलीह । रच्छ रहल एक टा खिड़की सेहो फुजले छूटि गेल छलनि । नहि तँ सबटा गैस घरेमे घुरिआइत रहितैक, अपने झरनबे करिथि, महल्लोकेँ सुड़ाह करिथि । आब मास लागत तखने भेटि सकत । एखन तँ स्टैंक सेहो खतमे छैक ।

पत्नी—ओहि अपराधक सजाय एहि बरिसातमे तीतल-भीजल जारनिस भानस करबामे अपन आँखि फोड़ि कऽ भोगिए रहल छी, मुदा मास्टर साहेब । हिनका पुछियौनि जे ओहि बेर गोदरेज आलमारी केँ फुजले छोड़िऽ अपने पटना चल गलाह आ टाका-पैसा, गहना-गुरिया सब ओही आलमारीमे । जँ कयो पारतऽ दिनि तखन कोन उपाय करिथि ?

पति—ओही तँ अहीक कारणे भेल । भानसमे ततेक अबेर कऽ देलहुँ जे ट्रेने छूटऽ लागल । मुदा मास्टर साहेब ! हिनका पुछियौनि . . .

हम आब अक्छि गेल छलहुँ । तारीख बदलि चुकल छलैक । आँखि कुटकुटा रहल छल आ हिनका दुनू प्राणीक एक दोसरापर अभियोगक कतहुँ ओर-छोर नहि देखि पड़ि रहल छल, तँ हम बीचमे टोक दैत कहलियनि—अहाँ दुनू गोटे जँ हमरा पंच मानी तँ अपन-अपन अभियोगपत्र फराक-फराक लिखि, एहि एक सदस्यीय आयोगक समक्ष काल्ह उपस्थित करू । अभियोग पत्रक सम्यक् अध्ययन कऽ एक सप्ताहमे हम रिपोर्ट दऽ देब । सम्प्रति जे समस्या सोझामे अछि तकर समाधान ताकू ।

फल्लाँ बाबू बजलाह—समस्या साधारण नहि अछि । डेरामे अलीगढ़क बड़वा ताला लागल अछि आ ई कुंजी गामेपर बिसरने अइलीह ।

पत्नी बीचमे टोक देलथिन—फेर हमरा माथपर देखि थोपैत छी ? कहियौनि जे हम कुंजी गामेपर बिसरि अयलहुँ अछि तँ अपन कुंजीक झब्बा दियऽ, वनेक 'ट्राइ' करिऐक ।

हम अपन स्थिति स्पष्ट करैत कहलियनि—हम अहाँलोकनि जवाँ धन्ना सेठ थोड़े छी जे कुंजीक झब्बा राखब ! हमरा घरक सामान सब तँ 'न चौर हाय न च राजहार्यम्' तखन ताला लऽ दऽ की ? आ, कुंजी कथीक ?

ओ दुनू प्राणी घूरि कऽ अपन बरपड़ा पर गेलाह आ एक सग चीत्कार कऽ उठलाह से बुझना गेल जे साप दाटि लेलनि । गलापर देखैत छथि जे अत्तर-बल्लर वस्तुवाला बोरा पड़ले छनि आ हमरा शिष्याक ट्रंक आ फल्लाँ बाबूक अटैची दुनू पार छनि ।

मिश्रटला, द. १३. १।

अग्रिम अंक सेहो

कथा अंक

होयत,

जहिमे निम्नलिखित कथाकार लोकनिक कथा संभावित

श्री उपेन्द्र नाथ झा 'ध्यास', योगानन्द झा, गोविन्द झा, धर्म रेन्द्र कुमार, उग्रानन्द विभूति आनन्द, मधुसूदन मणि, रविकान्त नीरज, शैलेन्द्र आनन्द, डा० नरेन्द्रनाथ मिश्र यशस्वी श्री दिनेश दिहारी लाल आदि